Bihar Board Class 7 Social Science Civics Notes
Chapter 11 समानता के लिए संघर्ष

पाठ का सार संक्षेप

इस पुस्तक के सभी पाठ में हमने समानता के लिए होते संघर्षों के बारे में पढ़ा । यहाँ हमारे सामने एक बात आई कि हम सभी समान पाने की इच्छा रखते हैं यानि समानता की उम्मीद करते हैं। पर हमें किसी-न-किसी रूप में असमानता दिख ही जाती है। हमें कई बार अपनी उम्मीदों से निराश भी होना पडता है। परंतु इस निराशा के बावजूद भी लोग न्याय के लिए संघर्ष करना नहीं छोड़ते और समानता की इच्छा बनाए रखते हैं। इसका सबसे सही उदाहरण है गंगा बचाओ आंदोलन जहाँ मछुआरे ने अपने कठिनाइयों से भरे जीवन को संघर्ष के बदौलत खुशियों से भर दिया।

बिहार के लिए गंगा जीवनदायिनी है। बिहार में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जो गंगा आधारित सिंचाई, यातायात तथा मछली व्यवसाय से अपना जीवन-यापन करते हैं। इस वजह से यहाँ के दबंगों और जमींदारों की नजरें गंमा पर गयी। वे लोग मछली मारने वाले मछुआरों, नाव चलाने वाले मल्लाहों आदि से रकम वसूलने का प्रचलन शुरू कर दिया ।

धीरे-धीरे इस व्यवस्था ने ठेकेदारी का रूप धारण कर लिया। मछुआरों ने एक सहकारी समिति का गठन किया । अब पहले की अपेक्षा मछुआरों और मल्लाहों का और अधिक शोषण होने लगा। बड़े मछुआरों ने सहकारी समिति और ठेकेदारों से पट्टे पर घाट एवं नदी के निर्धारित क्षेत्र लिया और फिर वे छोटे मछुआरों और उससे भी छोटे मछुआरों को देने लगे। इस प्रकार मछुआरों और मल्लाहों का शोषण और भी बढ़ने लगा, उन्हें उनकी रोटी छीनती नजर आ रही थी।

इससे मछुआरों और मल्लाहों के बीच बेचैनी बढ़ने लगी। इसी बीच
सरकार द्वारा फरक्का नामक स्थान पर गंगा नदी पर बाँध दिया गया
जिससे समुद्र से गंगा में मछलियों एवं जीरे आना बंद हो गया ।

जिसके फलस्वरूप गंगा में मछलियों की कमी होने लगी। इस प्रकार मछुआरों के भूखे मरने की नौबत आ गयी । गंगा के दोनों किनारों पर फैक्ट्रियाँ लगने पर उनसे निकलने वाले कचरे से गंगा और भी प्रदूषित होने लगी। प्रदूषण की वजह से मछलियाँ मरने भी लगीं और उनकी प्रजनन क्षमता भी कम होने लगी। अपने जीने के आधारों को समाप्त होता देख मछुआरों ने अपने हक के लिए 1982 से कहलगाँव के कागजी टोला से संघर्ष का ऐलान किया ।

संघर्ष के लिए उन्होंने जाति प्रथा तोड़ने, शराबखोरी बंद करने, महिलाओं को बराबर का हक आदि का संकल्प लिया। इसके अंतर्गत मछुआरों द्वारा कई संगठनों का गठन किया गया । धरना प्रदर्शन, नशाबंदी शिविर, लंबी-नौका यात्रा तथा महिलाओं के भागीदारी के प्रयास किए गए जिसका सार्थक प्रभाव पड़ा। इस आंदोलन का विस्तार गंगा के दोनों किनारों पर हुआ।

https://www.evidyarthi.in/